शौर्य और देश प्रेम

कवि परिचय :

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का जन्म 1897 ई० में म.प्र. के शाजापुर जिले के शुजालपुर गाँव में हुआ था। बड़े होने पर गणेश शंकर विद्यार्थी और गांधीजी के सम्पर्क में आने पर स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने लगे। ये भारतीय संविधान निर्माण परिषद के सदस्य रहे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने में भी इनका योगदान रहा। इन्होंने भारतीय संस्कृति, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, राष्ट्रीय भावनाओं, प्रेम एवं शृंगार पर ओजस्वी एवं सुमधुर कविताओं की रचना की। इनकी रचनाओं में कहीं-कहीं रहस्यवादी भावनाएँ भी दृष्टिगत होती हैं। सन् 1960 में इनका शरीरांत हो गया।

उर्मिला, कुंकुम, रश्मि रेखा, अपलक, क्वासि, विनोबा-स्तवन, प्राणार्पण इनकी प्रमुख कृतियाँ है। नवीन जी के काव्य में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान जिए गए कठोर जीवन की अनुभूतियाँ व जन जागृति के स्वर हैं। मानवता की भावना से ओतप्रोत प्रेम व विरह की संवेदनाएँ भी इनके काव्य में मुखर हुई हैं। प्रकृति के विविध रूपों का चित्रण भी इनके काव्य की विशेषता है। नवीन जी ने अपने काव्य में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया हैं। इनकी शैली कहीं ओजपूर्ण और कहीं अत्यंत कोमल है। देशप्रेम पर आधारित रचनाएं लिखने के कारण इनके काव्य में ओजपूर्ण शैली का प्रयोग अधिक हुआ है। आधुनिक काल के राष्ट्रीय काव्य धारा के कवियों में इनका विशिष्ट स्थान है।

स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। इसकी रक्षा प्राणपण से की जानी चाहिए। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' राष्ट्रीय वीर काव्य के प्रणेताओं में प्रमुख हैं। उनके काव्य में राष्ट्रीय संग्राम की कठोर जीवनानुभूति एवं जागरण के स्वर व्यंजित हुए हैं। 'हिन्दुस्तान हमारा है' कविता में कवि का देशप्रेम का स्वर मुखरित हुआ है। कविता में कवि ने अपनी ओजपूर्ण शैली में भारत की गौरवशाली परंपराओं का गान किया है। यहाँ का इतिहास समृद्ध है तो प्राकृतिक गौरव हमारे तीर्थ। हमारा अतीत गौरवशाली है और भविष्य उज्ज्वल। किसी का साहस नहीं है कि कोई हमसे टकरा सके। इस प्रकार बड़े ही प्रभावशाली ढंग से देशभक्ति की भावना को इस कविता में अभिव्यक्त किया गया है।

कवि नेपाली ने भी स्वतंत्रता को दीपक के प्रतीक रूप में प्रस्तुत करते हुये स्पष्ट किया है। अपनी संपूर्ण शक्ति के साथ प्रज्ज्वलित किया गया यह दीपक हमारी शक्ति और परिपूर्ण आराधना का आधार पाकर सदैव प्रकाशित रहे। शक्ति और भक्ति का समन्वय ही स्वतंत्रता की रक्षा करने में समर्थ है। कितनी भी विपरीत परिस्थितियाँ निर्मित क्यों न हो? शांति - अशांति, युद्ध और संधि सभी परिस्थितियों में स्वतंत्रता की ज्योति जलानी ही चाहिए। शहीदों की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए स्वतंत्रता का सम्मान हर जगह किया जाना चाहिए। हमें सदैव स्वतंत्रता की रक्षा के लिए तत्पर रहना चाहिए। गोपाल सिंह 'नेपाली' ने स्वतंत्रता के मुक्त आकाश में ही विकास का स्वप्न देखा है।

हिन्दुस्तान हमारा है!

कोटि-कोटि कंठों से निकली आज यही स्वर धारा है-
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है॥

(1)

जिस दिन सबसे पहले जागे, नवल सृजन के स्वप्न घने,
जिस दिन देश-काल के दो-दो, विस्तृत विमल वितान तने,
जिस क्षण नभ में तारे छिटके, जिस दिन सूरज-चाँद बने,
तब से है यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है!
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

(2)

जब कि घटाओं ने सीखा था सबसे पहले घहराना,
पहले पहल प्रभंजन ने जब सीखा था कुछ हहराना,
जब कि जलधि सब सीख रहे थे सबसे पहले लहराना,
उसी अनादि-आदि क्षण से यह जन्म-स्थान हमारा है!
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

(3)

जिस क्षण से जड़ उजकण गतिमय होकर जंगम कहलाए,
जब विहँसी थी प्रथम उषा वह, जब कि कमल-दल मुस्काए,
जब मिट्टी में चेतन चमका, प्राणों के झोंके आए,
है तब से यह देश हमारा, यह मन-प्राण हमारा है!
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

(4)

यहाँ प्रथम मानव ने खोले, निदियारे लोचन अपने!
इसी नभ तले उसने देखे, शत-शत नवल सृजन-सपने!
यहाँ उठे 'स्वाहा' के स्वर, औ- यहाँ 'स्वधा' के मंत्र बने!
ऐसा प्यारा देश पुरातन, ज्ञान-निधान हमारा है!
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

(5)

सतलज, व्यास, चिनाब, वितस्ता, रावी, सिंधु तरंगवती,
यह गंगा माता, यह यमुना गहर, लहर-रस-रंगवती,
ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी, वत्सलता-उत्संग-सी,
इनसे प्लावित देश हमारा, यह रसखान हमारा है!
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

(6)

विंध्य, सतपुड़ा, नागा, खसिया, ये दो औघट घाट महा,
भारत के पूरब-पश्चिम के, यह दो भीम कपाट महा!
तुंग शिखर, चिर अटल हिमालय; है पर्वत-सम्राट यहाँ!
यह गिरिवर बन गया युगों से विजय निसान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

(7)

क्या गणना है, कितनी लम्बी हम सबकी इतिहास लड़ी?
हमें गर्व है कि है बहुत ही गहरे अपनी नींव पड़ी।
हमने बहुत बार सिरजी हैं कई क्रान्तियाँ बड़ी-बड़ी,
इतिहासों ने किया सदा ही अतिशय मान हमारा है!
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

(8)

है आसन्न-भूत अति उज्ज्वल, है अतीत गौरवशाली,
औ, छिटकी है वर्तमान पर, बलि के शोणित की लाली,
नव ऊषा-सी विजय हमारी विहँस रही है मतवाली!
हम मानव को मुक्त करेंगे, यही विधान हमारा है!
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

(9)

गरज उठे चालीस कोटि जन, सुन ये वचन उछाह भरे,
काँप उठे प्रतिपक्षी जगगण, उनके अंतस्तल सिहरे;
आज नए युग के नयनों से, ज्वलित अग्नि के पुंज झरे;
कौन सामने आएगा? यह देश महान हमारा है!
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

कवि परिचय :

गोपाल सिंह 'नेपाली'

गोपाल सिंह 'नेपाली' का जन्म बेतिया (बिहार) में 11 अगस्त सन् 1903 ई० को एक नेपाली परिवार में हुआ था। इनके पिता राय बहादुर देहरादून में गोरखा रायफल में सैनिक थे। इन्होंने 14 वर्ष की आयु से ही कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन व कवि सम्मेलन में गायन से इन्होंने अच्छी ख्याति अर्जित की। ये देश के विभिन्न समाचार पत्रों के सम्पादकीय विभाग में भी रहे। 50 से अधिक फिल्मों में गीत भी लिखे। 1962 ई० में चीन युद्ध के समय इस जन कवि ने पूरे देश में भ्रमण कर कविताओं के माध्यम से देशभक्ति की भावना का प्रचार-प्रसार किया। 17 अप्रैल 1962 को इनका निधन हुआ।

उमंगें, पंछी, रागिनी, नीलिमा, पंचमी, सावन, कल्पना, आँचल, रिमझिम, नवीन हिन्दुस्तान, हिमालय पुकार रहा है आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

नेपाली जी ने प्रकृति के रम्य और मनोहर रूपों को प्रणय व सौन्दर्य बोध से मिलाकर काव्य रचना की है। इनकी कविताओं में राष्ट्रप्रेम, निराशा से जूझने का सन्देश व शोषित के प्रति सहानुभूति का भाव व्यक्त हुआ है। इनके प्रणय गीतों में मधुरता व प्रयाण गीतों में ऊर्जा है।

इनकी भाषा में साहित्यिकता व व्यावहारिकता का समन्वय है। जन कवि होने के करण भाषा अत्यन्त सरल व सहज है। प्रतीकों के माध्यम से बात करने में ये कुशल है। इन्होंने गीति शैली को अपनाया। चित्रात्मकता, संगीतात्मकता के गुण के कारण इनकी भाषा में प्रवाह व प्रभाव है।

हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय कवियों में नेपाली जी का विशिष्ट स्थान है। गीतिधारा को आगे बढ़ाने में भी इनका योगदान है।

स्वतंत्रता का दीपक

घोर अंधकार हो, चल रही बयार हो,
आज द्वार-द्वार पर यह दिया बुझे नहीं!
यह निशीथ का दिया ला रहा विहान है!

1.

शक्ति का दिया हुआ, शक्ति को दिया हुआ,
भक्ति से दिया हुआ, यह स्वतंत्रता-दिया,
रुक रही न नाव हो, जोर का बहाव हो,
आज गंग-धार पर यह दिया बुझे नहीं!
यह स्वदेश का दिया प्राण के समान है!

2.

यह अतीत कल्पना, यह विनीत प्रार्थना,
यह पुनीत भावना, यह अनंत साधना,
शांति हो, अशांति हो, युद्ध-संधि-क्रांति हो,
तीर पर, कछार पर यह दिया बुझे नहीं !
देश पर, समाज पर ज्योति का वितान है !

3.

तीन-चार फूल हैं, आस-पास धूल है,
बाँस हैं, बबूल हैं, घास के दुकूल हैं,
वायु भी हिलोर दे, फूँक दें, झकोर दे,
कब्र पर, मजार पर यह दिया बुझे नहीं!
यह किसी शहीद का पुण्य प्राण-दान है!

4.

झूम-झूम बदलियाँ, चूम-चूम बिजलियाँ
आँधियाँ उठा रहीं, हलचलें मचा रहीं!
लड़ रहा स्वदेश हो, शांति का न लेश हो,
क्षुद्र जीत-हार पर यह दिया बुझे नहीं!
यह स्वतंत्र भावना का स्वतंत्र गान है!

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(1) 'हिन्दुस्तान हमारा है' से कवि का क्या आशय है?

(2) हमारा अतिशय मान किसने किया है?

(3) निशीथ का दिया क्या ला रहा है?

(4) स्वतंत्रता को 'निशीथ का दिया' क्यों कहा गया है?

2. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(1) 'यह स्वतंत्र भावना का स्वतंत्र गान है' का संकेत किस ओर है?

(2) कवि स्वतंत्रता का दीपक किन परिस्थितियों में जलाए रखने की प्रेरणा देता है?

(3) 'हिन्दुस्तान हमारा है' एवं 'स्वतंत्रता का दीपक' कविताओं में कौन सा रस है? उदाहरण देकर समझाइए।

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. 'हिन्दुस्तान हमारा है' कविता में भारतीय इतिहास का चित्रण हैं, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
2. भारत की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने के लिए कवि का क्या संदेश है?
3. 'स्वतंत्रता शहीदों के पुण्य प्राण-दान का प्रतिफल है।' स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या लिखिए-

अ. **विंध्य, सतपुड़ा, नागा, खसिया, ये दो औघट घाट महा,**
भारत के पूरब-पश्चिम के, यह दो भीम कपाट महा!
तुंग शिखर, चिर अटल हिमालय; है पर्वत-सम्राट यहाँ!
यह गिरिवर बन गया युगों से, विजय निसान हमारा है
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है!

आ. **तीन-चार फूल हैं, आस-पास धूल है,**
बाँस हैं, बबूल हैं, घास के दुकूल हैं,
वायु भी हिलोर दे, फूँक दें, झकोर दे,

काव्य सौन्दर्य-

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए-

अ. शक्ति का दिया हुआ शक्ति को दिया हुआ।

आ. यह पुनीत कल्पना, यह विनीत प्रार्थना।

इ. यह किसी शहीद का पुण्य प्राण-दान है।

2. स्वतंत्रता का दीपक कविता में निम्नलिखित शब्द किस ओर संकेत करते हैं? इन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग भी कीजिए-

निशीथ, विहान, बिजलियाँ, आँधियाँ

3. 'स्वतंत्रता का दीपक' में स्वतंत्रता उपमेय और दीपक उपमान है। इस स्थिति में यहाँ कौन-सा अलंकार है?

4. 'स्वतंत्रता का दीपक' कविता में दिया शब्द का एक ही पंक्ति में दो बार प्रयोग हुआ है और उसके अलग-अलग अर्थ है उस पंक्ति को छाँटकर लिखिए तथा उसमें प्रयुक्त अलंकार का नाम भी स्पष्ट कीजिए।

आइए जानिए-

''बुन्देले हरबोलों के मुख, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥''

इस कविता को पढ़ने से मन में अत्याधिक उत्साह का संचार होता है। हमारी भुजाएँ फड़क उठती हैं। झाँसी की रानी की चेष्टाएँ और प्रशंसा हमें प्रेरित करती है। इस कविता में स्मृति, गर्व और आवेश का संचार होता है।

वस्तुतः ''काव्य पढ़ने, सुनने अथवा रंग मंच पर अभिनय देखने से जहाँ उत्साह भाव जागृत हो, वहाँ वीर रस होता है।''

और भी जानिए-

''प्रति भट कटक कटीले केते काटि-काटि,
कालिका-सी किलक कलेउ, देते काल को।''

- इस काव्यांश को पढ़ने से हमारे हृदय में स्वतः ही उत्तेजना का संचार हो रहा है।
- जहाँ किसी रचना को पढ़कर मन में उमंग और उत्साह आदि का संचार हो वहाँ ओजगुण होता है। ओज दीप्त और उत्तेजना पैदा करने वाला गुण है। वीर रस और ओजगुण का चोली-दामन का साथ है।

5. 'स्वतंत्रता का दीपक' एवं 'हिन्दुस्तान हमारा है' कविता में कौन सा रस है? उदाहरण देकर समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. 'स्वतंत्रता का दीपक' कविता के उन काव्यांशों को लिखिए जो आपके हृदय को छूते हैं।
2. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की अन्य दो ओजस्वी कविताएँ खोजकर पढ़िए।
3. वीर रस की कविताओं का संकलन कीजिए एवं विद्यालय में वीररस व अन्य रसों से संबंधित एक हस्तलिखित पत्रिका तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

घोर = भयंकर/भयानक, बयार = हवा, निशीथ = रात्रि, विहान = प्रातःकाल, सवेरा , अतीत = बीता हुआ, वितान = चंदोवा, प्रभंजन = प्रचण्ड वायु/आँधी, जलधि = समुद्र, विहंसि = मुस्कराना, स्वधा = पितरों को दिया जाने वाला, पुरातन = प्राचीन, ज्ञान -निधान = ज्ञान का खजाना, गहर = गहन/दुर्गम, वत्सलता = पुत्र प्रेम से युक्त, प्लावित = जल में डूबा हुआ, औघट = कठिन/दुर्गम, कपाट = दरवाजा, अंतस्तल = अंदर का भाग

* * *